

Drone Demonstration for Fish Feed Broadcasting and Spraying Medicine etc. in Large Aqua Farm for Enhancing Fish Productivity and Opportunity for Custom Hiring Support to the Fish Farmer

ICAR- National Bureau of Fish Genetic Resources, Lucknow organized a field demonstration of drone in large water body (25 Acre) at village Mehura-Fatepurva, Laullai, Chinhat, Lucknow parallel to Kisan Path on dated 12.01.2023. The programme aimed at fostering awareness and disseminating knowledge about drone technologies and its application in farming among fish farming communities and un-employed youth. About 50 beneficiaries from diverse stakeholder groups actively participated in the field level drone demonstration programme. Dr. Sharad Singh, Principal Scientist and In-charge ARTU Chinhat and Dr. Raghvendra Singh, Scientist, ICAR-NBFGR, Lucknow addressed beneficiaries about the benefits of using the Agri-drone in farming and made them aware too about the guidelines and regulations for use of Agri-drone in farming. Shri Ravi Kumar, Assistant Chief Technical Officer and Shri Vikas Kumar, Senior Technical Officer demonstrated fly of drone with fish feed broadcasting and spraying of medicine in the waterbody.

Aqua-Drones offer prominent solution by significantly reducing direct contact with aqua-chemicals for farm workers, thereby mitigating potential health hazards. They can operate efficiently across small and large waterbodies. Through precise GPS measurements of field areas, the resources are accurately weighed and applied as per recommendations, curbing misuse and saving resources like fish feed, fertilizers, aqua-chemicals, medicines, water and time. Furthermore, this technology holds promise for custom hiring support to the fish farmer through effective applications for the supply of various aquaculture input in the large waterbodies by effectively addressing labour shortages in farming and generating employment opportunities in the backward area.

Being battery-operated and eco-friendly, drones offer cost-effective operations without relying on petroleum products. The Government of India has issued comprehensive guidelines and regulations for the use of agri-drones, managed by the Directorate General of Civil Aviation (DGCA) through its 'Digital Sky Website.'

(Source: Director and Nodal Scientist Agri-Drone Project, ICAR- National Bureau of Fish Genetic Resources, Lucknow)



मत्स्य उत्पादकता बढ़ाने के लिये बड़े जलकृषि प्रक्षेत्र में मत्स्य खाद्य प्रसंस्करण और दवा आदि के छिड़काव के लिए ड्रोन एवं मत्स्य पालको को कस्टम हायरिंग सहायता के अवसर

भाकृअनुप-राष्ट्रीय मत्स्य अनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ ने दिनांक 12 दिसम्बर, 2023 को ग्राम मेहरा-फतेपुरवा, लौलाई, चिनहट, लखनऊ के एक बड़े जलकृषि प्रक्षेत्र (25 एकड़) में ड्रोन का प्रदर्शन आयोजित किया। कार्यक्रम का उद्देश्य मत्स्य पालन करने वाले समुदायों एवं बेरोजगार युवाओं के बीच ड्रोन प्रोद्योगिकी के बारे में जागरूकता बढ़ाना एवं ज्ञान का प्रसार करना है।

ड्रोन जलकृषि उपयोगी रसायनों से संबन्धित कार्यकर्ताओं को सीधे संपर्क से बचाता है। जिससे संभावित स्वास्थ्य खतरों को कम किया जा सकता है। ड्रोन छोटे एवं बड़े जलक्षेत्र तालाबों और भारी वर्षा या अत्यधिक तापमान जैसी प्रतिकूल परिस्थितियों में कुशलतापूर्वक काम करते हैं। प्रक्षेत्रों को सटीक जीपीएस माप के माध्यम से जल रसायनों को सटीक रूप में मापा एवं अनुमोदन अनुसार लागू किया जाता है। जिससे दुरुपयोग पर अंकुश लगता है और मत्स्य खाद्य, उर्वरक, दवाएं, जल, समय आदि संसाधनों की बचत होती है। इसके अलावा ड्रोन तकनीक बड़े जलक्षेत्र वाले तालाबों में विभिन्न जलकृषि निवेश की आपूर्ति के लिए प्रभावी अनुप्रयोगों को माध्यम से मत्स्य कृषकों को कस्टम हायरिंग का समर्थन करती है जो खेती में श्रमिकों की कमी को प्रभावी ढंग से संबोधित करता है और पिछड़े क्षेत्र में रोजगार के अवसर पैदा करता है।

बैटरी से चलने वाले और पर्यावरण के अनुकूल होने के कारण, ड्रोन पेट्रोलियम उत्पादों पर निर्भर हुए बिना प्रभावी संचालन प्रदान करते हैं। भारत सरकार ने अपनी डिजिटल स्काई वेबसाइट के माध्यम से नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) ड्रोन द्वारा प्रबंधित कृषि के उपयोग के लिए व्यापक दिशानिर्देश सम्बन्धित नियम जारी किए हैं।

विभिन्न प्रगतिशील मत्स्य पालक एवं बेरोजगार युवाओं ने कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया।

(स्रोत- भाकृअनुप-राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ)

